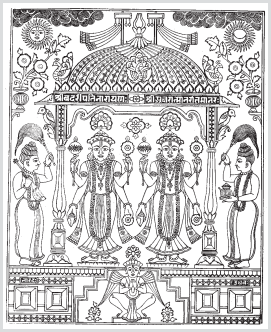

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ५९ मार्च-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०२

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०३

०३. प्रातः पूजा ०४

०४. प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों उवारसद गाँव में प्रथम मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ०६

०५. सरलता - सहजता - भोलापन ०८

०५. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से ०९

०६. सत्संग बालवाटिका १०

०७. भक्ति सुधा १३

॥ अस्मदीयम् ॥

ऋतुओं की रानी वर्षा के पूर्ण होते ही गर्मी का एहसास होने लगा है। पतझड़ का आगमन होते ही वृक्षों पर नूतन किसलयों से आच्छादित अपार शोभा चारो तरफ विखरती दिखाई देगी। जिस तरह ऋतुओ का क्रम बदलता रहता है ठीक वैसा ही अपने जीवन का क्रम बदलता रहता है। बालपन, युवावस्था तथा वृद्धावस्था क्रम से आता है। बालपन तथा युवावस्था बहुत जल्दी तथा शरलता से बीत जाती है लेकिन वृद्धावस्था तो बड़ी ही कष्टकर एवं इस अवस्था में समय विताना कठिन हो जाता है। शरीर का स्वास्थ्य जब तक ठीक चलता है तब तक तो अच्छा लेकिन स्वास्थ्य बिगड़ते ही जीवन कष्ट दायक प्रतीत होने लगता है। यह सब शरीर की एक प्रक्रिया है। जो परिवार संस्कारी एवं धार्मिक होता है वहाँ पर वृद्धों की सेवा व्यवस्थित होती है। लेकिन जिस परिवार में संस्कार नहीं होता, धर्म नहीं होता, विवेक, आत्मीयभाव, एकता, प्रेम नहीं होता और झगड़ा, कलह, एकता का अभाव, धर्म हीनता, संस्कार हीनता इत्यादि हो तो उस परिवार में शांति एवं सुख देखने को भी नहीं मिलता।

शांति तथा सुख का श्रेष्ठ मार्ग हम जानते हैं फिर भी उस पर चलते नहीं है। इसी कारण व्यक्ति जीवन में दुःख भोगता है। अपना जन्म श्रेष्ठ संप्रदाय में हुआ है। हमें सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण मिले हैं। ८४ लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद अमूल्य मानव शरीर मिली है। यदि ऐसी देव दुर्लभ देह मिलने के बाद भी भगवान की भजन नहीं होती है तो निश्चित ही संसार का चक्रचालू ही रहेगा। इसलिये अपने जीव के कल्याणार्थ सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की भजन करनी चाहिये। हमें महाराज द्वारा प्रतिष्ठित देव, मंदिर धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल आश्रित संत-हरिभक्त मिले हैं। इससे बड़ी सरलता से हम सभी का कल्याण निश्चित है।

चैत्र मास शुक्ल पक्ष नवमी को हम सभी के इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण का प्रादुर्भाव काल है। आज के दिन प्रभुराम का भी प्रादुर्भाव काल है। इसी चैत्र वद के अवसर पर बड़े पू. महाराजश्री का जन्मोत्सव भी बड़े धूमधाम से मनाया जायेगा। इनका स्मरण यदि सदा के लिये हृदय में रहेगा तो निश्चित ही जीव का अन्तकाल में कल्याण होगा। इसलिये भगवान की भक्ति करने के सिवाय इस जगत में कुछ भी नहीं है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१२)

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

७. श्री गांडालाल पटेल के यहाँ पदार्पण, घाटलोड़िया।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री रतिभाई खीमजीभाई पटेल (कमेटी सदस्य) के यहाँ पदार्पण, रांधेजा।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार, पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४-१५. हीरापरा (कच्छ) पदार्पण।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बारेजा (जेतलपुर देश) मूर्तिप्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१८. श्री राओल राजेन्द्रसिंह अभेसिंह के यहाँ पदार्पण घोड़ासर।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणपुर (विजापुर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२२-२३. भुज (कच्छ) पदार्पण।

२४. सूर्यनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों के मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

दोपहर में अंजार (कच्छ) पदार्पण।

२७. अंजार (कच्छ) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर के खात पूजन प्रसंग पर पदार्पण।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यारा (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (डाभी) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट : **www.narayanghat.com**

प्रातः पूजा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के मुख से शास्त्रों में निर्देश किया है कि प्रातः सन्ध्या की पूजा विधिशिक्षापत्री श्लोक नं. ४९ से ५४ में बताये के अनुसार करनी चाहिये । इसी तरह वचनामृत गढडा प्रकरण-४८ में आज के युग के अनुसार जितना शक्य हो उस ढंग की पूजा की जा सकती है। पूजा विधिमें अपनी रुची के अनुसार कम बेसी किया जा सकता है। लेकिन क्रम में फेरफार करना उचित नहीं है। जिस तरह भोजन में मसाला, घी, नमक इत्यादि का क्रम होता है उसमें फेरफार नहीं किया जा सकता है, फेर फार करदें तो विपरीत भोजन बन जायेगा ।इसी तरह पूजाविधिको क्रम बद्ध करना चाहिये।

ब्राह्म मुहूर्त-सूर्योदय से पूर्व स्नानादिक करके धुला वस्त्र एकनीचे तथा उत्तरीयवस्त्र को धारण करके उत्तराभिमुख या पूर्वाभिमुख बैठना चाहिये । यदि सूत का वस्त्र होतो रोज धोना चाहिये यदि ऊनका हो या रेशम का होतो भोजन करने के बाद धोना चाहिये।

घर में पानी छिड़ककर शुद्ध-साफ करके उत्तराभिमुख या पूर्वाभिमुख बैठना चाहिये।अपने बैठने के आसन से प्रभु के आसन की दूरी आवश्यक है सटना नहीं चाहिये।अर्थात् एक ही आसन दोनो का न हो।खड़े होकर पूजा न करें।पूजा करने से पूर्व तीन बार आचमन करें।दाहिने हाथ में जल लेकर उसके नीचे वांये हाथ को रखकर दाहिने पैर पर रखकर आचमन करे । बाद में पुरुष ऊर्ध्वपुंड्र तिलक तथा बीच में गोल चन्दन करे । तिलक चंदन से करे या माटी से करे, गोलाकार-चन्दन से या कुमकुम से करे । इसी तरह हृदय में तथा दोनो बाहू में अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, तथा संकर्षण के नाम वाला तिलक करे।शिक्षापत्री भाष्य में शतानन्द स्वामीने तिलक करने के नियम में अनामिका अंगुली के अग्रभाग से बीच के गोल चन्दन के ऊपर खड़ा तिलक करना चाहिये । जिसमें भगवान के दो चरणों की भावना करनी चाहिये।

सधवा स्त्री केवल बीच में गोलचन्दन करें । विधवा कुछ भी न करें । इन सभी विधिके बाद मानसी पूजा करनी चाहिये । इन सभी के साथ पूजा विधि ठन्ढी-गर्मी-वरसात में अलग अलग करनी चाहिये । भगवान की पूजा विधि-स्नान-वस्त्र-अलंकार, चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य, आसन इत्यादि मानसिक कल्पनाओं से गद्गद् होकर करना चाहिये । भगवान के आसन पर मूर्तियों को रखकर आवाहन करना चाहिये । मूर्तियां - (१) इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण (२) श्रीनरनारायणदेव (३) श्री राधाकृष्णदेव इन तीन स्वरुपों को अपनी पूजा में अवश्य रखना चाहिये । कारण यह कि अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा धर्मवंशी आचार्य (गुरु) महाराजश्री देते हैं । ''श्रीकृष्णस्त्वं गतिर्मम'' इस मंत्र की दीक्षा प्राप्त करके यथा शक्ति यथा समय प्रसन्न मुद्रा में जप करना चाहिये । कितने हरिभक्त इच्छानुसार जप करते है, जिस मंत्र की दीक्षा लेते है वह गौड़ वनजाती है।इस विषय में महाराज ने शिक्षापत्री में स्पष्ट आज्ञा किया है कि गुरु से अष्टाक्षर वाली मंत्र प्राप्त करके उसी का ही जप करें स्वामिनारायण मंत्र का भी जप कर सकते हैं । इस के लिये पूजा में राधाकृष्ण की चित्र प्रतिमा अवश्य रखें । मूर्ति तथा मंत्र में अपनी कल्पना काल्पनिक कही जायेगी।

श्रीहरि के वचनानुसार नीति-रीति पूर्वक जपादिक करना सत्संगी का धर्म है। वचनामृत ग.प. ४८ में श्रीहरि ने कहा है कि - हरिभक्त मात्र प्रातः काल स्नानादि क्रिया पूर्ण करके श्री नरनरायणदेव की पूजा करके चार प्रदक्षिणा करे तथा अष्टांग दंडवत प्रणाम करे उस समय ''विश्वेस छो सकल विश्वतणा विधाता'' यह स्तुति बोलकर बाद में भगवान से मांगना चाहिये की हे

महाराज ! हमारी कुसंग से रक्षा की जिये, हे महाराज ! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या तथा देहाभिमान इत्यादि अन्तः शत्रुओं से भी रक्षा कीजिये । इसके साथ आप यह दीजिये की प्रतिदिन हमें आपके भक्त का साहचर्य मिलता रहे।

बाद में शिक्षापत्री का यथाशक्ति वांचन करे । एक स्तोत्र का पाठ करना चाहिये । जनमंगल का प्रतिदिन पाठ किया जा सकता है। पूजा के अन्त में हृदय में मूर्तियों के विसर्जन की भावना करनी चाहिये । उपरोक्त विधिश्रीजी महाराज द्वारा बताई हुई है। यदिश्रद्धा हो तो विस्तारपूर्वक कर समकते हैं । लेकिन सत्संगी इतनी पूजा प्रतिदिन अवश्य करें। दुनिया भर की पंचायत तथा गृह के प्रपञ्च में समय विताने का सभी के पास समय होता है लेकिन पन्द्रह मिनिट का समय प्रभु के लिये नहीं होता । ऐसा अवसर मिला है लेकिन पूजा करने का अवसर नहीं मिलता तो यह अवसर पुनः कब मिलने वाला है। पूजा से ही अपने इष्ट को प्रसन्न किया जाता है। एकबार प्रातः काल पूजा हो जाय तो दिन भर का समय मंगलमय हो जाता है। जो ऐसा नहीं करता उसकी किसी भी प्रकार की सेवा प्रभु स्वीकार नहीं करते।

पूजा की मूर्ति जिसे महाराज श्रीने प्रसादी करके दिया हो उसी की पूजा करनी चाहिये। अपने संप्रदाय में पूजा की मूर्तियों के विषय में मतमतान्तर प्रादेशिक है। लेकिन श्रीहरि द्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री के अनुसार या ग.प्र. ५८ में कहे अनुसार ही मूर्तियों को रखना चाहिये । इस में भी अपनी मरजी से कोई विधान जपादि के विषय में बनाना उचित नहीं। मात्र सहजानन्द स्वामी की आज्ञानुसार जपादि तथा मूर्ति पूजा में रखें ऐसी मेरी नम्र प्रार्थना है।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों उवारसद गाँव में

प्रथम मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

- शा. भक्तिनन्दनदासजी तथा
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, उवारसद)

उवारसद की भूमि को भगवान स्वामिनारायणने अनेकों वार अपने चरणों से पावन किया था । इस गाँव में महिला वर्ग के सत्संग में वृद्धि देखकर पुराना मंदिर छोटा पड़ने से नूतन मंदिर का निर्माण किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता से प्रथमवार प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों २६-१-१२ से २९-१-१२ तक मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से की गयी थी ।

प.पू. लालजी महाराजश्री सर्व प्रथम मूर्ति प्रतिष्ठा की यह श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के लिये अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना कही जायेगी । यह तो स्वयं श्रीहरि के अपर बाल स्वरुप घनश्याम महाराज ही है, इस शुभ कर्म से सारा गाँव धन्य हो गया है । प.पू. बड़े महाराजश्री जब लालजी के रुप में थे तब प.पू. पिताजी श्री देवेन्द्रप्रसादजी की आज्ञा से आफ्रिका के केन्या देश में संत-पार्षदों के साथ सर्व प्रथम विदेश की धरती पर गये थे । यह घटना भी संप्रदाय के साथ सर्वप्रथम विदेश की धरती के लिये इतिहास बन गई । मूर्ति प्रतिष्ठा की घटना भी संप्रदाय के लिये तथा श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के लिये चिर अविस्मरणीय है ।

इस महोत्सव के अन्तर्गत ता. २६-१-१२ से २९-१-१२ तक सत्संगिभूषण की कथा का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता मंदिर के तथा महोत्सव के मार्ग द्रष्टा संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार प.पू. वन्दनीय शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी थे । जिन्होंने अपनी भाव वाही शैली में कथाकरके सभी को आनन्दित किया था । संहितापाठ में जमीयतपुरा मंदिर के तथा महेसाणा मंदिर के स्वामी उत्तमप्रियदासजी एवं विजयप्रकाशदासजी थे । इस महोत्सव के प्रसंग पर २७-१-१२ से २९-१-१२ तक तीन दिन तक विष्णुयाग का आयोजन किया गया था ।

ता. २८-१-१२ को सायंकाल मूर्तियों की नगर यात्रा निकाली गयी थी । ता. २९-१-१२ को भव्यातिभव्य घटना जिसे कहा जाय वह यह कि प.पू. लालजी महाराजकी शोभायात्रा निकाली गयी थी । यात्रा में नाना विधश्रृंगार करके यानों में गीत वाद्ययन्त्रों के साथ लोग नाच रहे थे । जिसे सम्प्रदाय इतिहास के रुप में मानेगा ऐसा घटनाक्रम कि सभी के प्रत्यक्ष जब प.पू. लालजी महाराजश्री ने अपने हाथों वैदिक मंत्रोच्चार के बीच मूर्ति प्रतिष्ठा सम्पन्न किये थे । मूर्ति में जब मंत्र का संचार किये उसके बाद तो चमत्कार ही चमत्कार चारो तरफ प्रकाश फैल गया । इसका अनुभव उपस्थित सभी को हो रहा था । प्रतिष्ठा के बाद जब महाराजश्री आरती करने के लिये उद्यत हुये उस समय जय जयकार से आकाश गूंज उठा । भक्तजन पुष्पवृष्टि करने लगे । पू. लालजी महाराजी यज्ञशाला में जाकर यज्ञ की पूर्णाहुति करके सभा में विराजमान हुये, वहीं पर उनकी पूजा तथा आरती की

गयी थी । अन्त में लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया और कहा कि हम जो मूर्ति की प्रतिष्ठा किये है इस मूर्ति का आप सभी प्रतिदिन दर्शन अवश्य कीजियेगा । इसके साथ ही श्री नरनारायणदेव का आश्रय छोड़कर कहीं मत जाइयेगा ।

उसी समय प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे और प्रथम मंदिर में आरती करके सभा में पधारे थे । प्रथम कथा की पूर्णाहुति किये । यजमान परिवार द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया । इस अवसर पर करीब ७५ से भी अधिक संत पधारकर दर्शन का लाभ दिये थे । अन्त में इस कार्यक्रम के यजमान का सन्मान किया गया था । आगामी पाटोत्सव के यजमान की भी घोषड़ा कर दी गयी । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुये कहा कि आप सभी लोग यहाँ दर्शन करने प्रतिदिन आने का एक नियम रखियेगा ।

इस महोत्सव में शा. स्वा. भक्तिन्दनदासजी (जेतलपुरधाम) तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने तथा गाँव के भक्तों ने खूब परिश्रम करके उत्सव को सफल बनाया था । प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था ।

समग्र संचालन श्री घनश्यामभाई पटेल ने किया था । अन्त में सभी प्रसाद लेकर अपने जीवन को धन्य बनाये थे ।

अपने आगामी उत्सव

फाल्गुन वद-८ : ता. १५-३-गुरुवार को जेतलपुरधाम में श्री रेवती बलदेव, हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव

चैत्र शुक्ल-५ : ता. २७-३-१२ मंगलवार को अंजार मंदिर का पाटोत्सव

चैत्र शुक्ल-९ : ता. १-४-१२ रविवार राम नवमी को सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव अहमदाबाद, वडताल में उत्सव, रात्रि १०-१० को प्रागट्योत्सव आरती, अहमदाबाद कालुपुर मंदिर अक्षरभुवन में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव ।

चैत्र वद-२ : ता. ८-४-१२ रविवार को मांडवी-कच्छ का पाटोत्सव

चैत्र वद-३ : ता. ९-४-१२ सोमवार को प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी का प्रागट्योत्सव ।

प्रत्येक मास की २० तारीख तक आये हुए समाचार अंक में प्रकाशित किये जायेंगे बाद में आने वाला समाचार आगामी मास के अंक में प्रकाशित होंगे ।

सिद्धपुर मंदिर मो. १८२५१ ८९३५१ है निर्णय में शरत चूक से नंबर मे भूल हो गई है

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १९-०० ● शयन आरती २०-३०

सरलता - सहजता - भोलापन

- साधु देवस्वरुपदास (जयपुर)

अनन्य ममता विष्णौ ममता प्रेम संगता ।
भक्तिरिव्युत्यते भीष्म प्रहलादोद्धवनारदैः ॥

भीष्म, प्रहलाद, उद्धव तथा नारदजीने भगवान के प्रति अनन्य ममता का ही भक्ति कहा है । भक्त भगवान के प्रति अनन्य भाव ममत्व का भाव रखता है । ममता का सम्बन्धईश्वर के प्रतिजोड़ कर अहंतत्व को खत्म किया जा सकता है । अहंकार एकहजार माथावाला है । समझदारी, कुशलता, विलास-वैभव, धन, बुद्धि, शक्ति, रुप, व्यवहार इत्यादि रुप में अहंकार व्यक्त होता है । मनुष्य के जीवन में एक ऐसा संबन्धहोना चाहिये जहाँ पर अहंकार न हो परमेश्वर के निकट हो, मनुष्य का सम्बन्धतो समुद्र के लहर की तरह उपर-नीचे होने जैसा है । इसलिये भाव में आकर बहना नहीं चाहिये । जिस में ममत्व होता है उसके आनन्द की प्राप्ति का वर्णन अवर्णनीय होता है । ऐसी ममता यदि भगवान में हो तो दादा खाचर, प्रहलाद, नारद, मीरा,नरसी महेता जैसी स्थिति हो सकती है ।

सरलता, सहजता तथा भोलापन के कारण भगवान दादा खाचर के दरबारगढ में ही रहते थे । दादा खाचर को भगवान में इतना अधिक ममत्व था कि उनके चरण में अपना सर्वस्व समर्पण कर दिये थे । यही आनंद की परिभाषा है । समर्पण में ही आनंद है । मोह मांगने पर प्रसन्न होता है और प्रेम देने पर प्रसन्नता मिलती है । सब कुछ दिया जा सकता है लेकिन हृदय अर्पण करना बड़ा कठिन है । वचनामृत तथा गीता में भगवान कहते है कि -

मनुष्य का हृदय प्रभुमय होना चाहिये । ऐसा व्यक्ति जो भी कर्म करता है उसका सभी कर्म भक्तिमय बन जाता है । परंतु मानव मात्र कर्म करने से पहले ही फल की अपेक्षा रखता है । ऐसे व्यक्ति को कौन समझाये कि अपेक्षा के विना किया जानेवाला कर्म अधिक फलदायक होता है । चिंता मुक्त होकर मात्र कर्म करते रहना चाहिये । भगवान कहते हैं कि तुम अपने अहं को तथा ममत्व को मुझमें समर्पित करदो, मैं तुम्हारा होकर रहूंगा ।

दादा खाचर के भोलापन की तथा प्रेम की कहानी निराली है । एकवार महाराज प्रातः ४ बजे नाराज होकर दरबार गढ से निकल गये । दादा खाचर को पता चलते ही वे पीछे के दरवाजे से दौड़कर महाराज के पास पहुंच गये । महाराज के चरणों में गिरकर प्रार्थना करने लगे लेकिन महाराज उनकी एक बात नहीं माने और आगे चलते रहे । महाराज कहने लगे कि अब मुझे प्रेम पाश में नही फंसना है । और तेज गति से दौडने लगे । तब दादा दौड़कर इतनी शक्ति से अपनी बाहों में दबालिये कि छोड़ा नही पावें लेकिन महाराज उनकी दुगुनी ताकात से छुड़ाकर आगे बढे और फिर से पैर में गिर गये । महाराज उन्हें असहाय तथा लाचार समझकर करुणार्द्र भाव में आकर थोड़े दूर जाकर मन्दमुस्कान के साथ दादा खाचर की तरफ देखने लगे । देखा तो दादा खाचर की आंखो से अश्रुजल वह रहा है शरीर थर थर कांप रही है, अब उन्हें दया आ गयी और अपने पास बुलाकर गले लगाकर कहने लगे । दादा ! अब आप कभी भी रोना नहीं, इस तरह कहकर अपनी बांहो में दादा को कसकर लिपेट लिये और स्वयं अश्रुधार बहाते हुये भक्त के पृष्ठ भाग को भिगो दिये । दादा खाचर की आँख से अश्रुजल पोंछते हुये कहे कि दादा ! अब मैं आप के यहाँ नित्य विराजमान रहूँगा । ऐसा कहकर दादा के साथ महाराज दरबारगढ वापस आये । लाडूबा तथा जीवुबा को बुलाकर कहे कि हम यहाँ रहने वाले नहीं थे लेकिन दादा खाचर के प्रेमवश होकर अबयहीं दरबारगढ में सदा रहूँगा ।

यह शब्द कहा जा सकता है लेकिन इस का भाव व्यक्त करना कठिन है । परंतु शब्द द्वारा भाव को प्रगट अवश्य किया जा सकता है । भाव तो ईस्वर की कृपा से प्रगट होता है । जहाँ पर ऐसी सरलता रहती है, जहाँ पर ऐसा प्रेम रहता है वहाँ से परमात्मा कैसे जा सकते है । यह सरलता की अन्तिम सीमा है । इसी कारण दादा खाचर की आखों से अश्रुजल बहने लगा था ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

सफलता के शिखर पर पहुंचने के लिये बहुत सारे रास्ते है। सीढ़ी से चढकर ऊपर जाया जा सकता है। कितने लोग डोली में बैठकर सफलता की तरफ बढते हैं। अपना स्वामिनारायण म्युजियम भले सफलता के लिये सीढ़ी बनाई हो परंतु वह सीढ़ी स्वयं हम बनाये हैं। अपने महाराजश्रीने सम्प्रदाय के लिये सीडी बनाई है। इसीलिये म्युजियम की सफलता से हम सभी को आनंद आता है।

ता. २४-२-१२ फाल्गुन शुक्ल तीज अर्थात् श्री नरनारायणदेव का १९० वां पाटोत्सव, आज के दिन ही म्युजियम को १ वर्ष पूर्ण हुआ है। जिसका उत्सव म्युजियम में वर्तमान समय में सम्पन्न हो गया। यद्यपि यह उत्सव बहुत छोटे पैमाने पर हुआ था, लेकिन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं संत-भक्तो के मुख पर प्रसन्नता प्रगट हो रही थी। म्युजिमय की सुन्दरता, स्वच्छता के लिये थोड़े ही लोगों को रखा गया था। समूह महापूजा, ब्रह्म भोजन, सभा-कीर्तन तथा महाप्रसाद इत्यादि का आयोजन किया गया था। समूह महापूजा में १५१ यजमान थे। प्रातः कालुपुर मंदिरमें श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव से संबन्धित अभिषेक, सभा, अन्नकूट दर्शन इत्यादि कार्यक्रमो को पूर्ण करके सायंकाल ४-०० बजे म्युजियम के कार्यक्रम में सभी भाग लिये थे। सर्व प्रथम मोरबी के श्री हरिलाल केशर भगत, श्री तुलसीदास रतनसी भगत, श्री हीरालाल केशरा भगत, श्री देवजी रतनशी भगत, श्री जीवराजभाई प्रेमजीभाई भगत, रेवापर कच्छ मुख्य यजमान, तथा ब्रह्म भोजन के मुख्य यजमान के साथ १५१ पीढे के सामूहिक यजमान अपने अपने स्थान पर शिस्तबद्ध बैठे हुये थे। प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के पवित्र सानिध्य में करीब ३ घन्टे तक चली थी। इस महापूजा से तथा श्री नरनारायणदेव के चल स्वरुप के अभिषेक से तथा श्री नरनारायणदेव के चल स्वरुप के अभिषेक से वातावरण अलौकिक-दिव्य हो गया था। वह दिव्य अनुभव का वर्णन शब्द से करना सम्भव नहीं है। इस कार्यक्रम का संचालन शास्त्री स्वा. निर्गुणदासजीने किया था। इस संप्रदाय के प्रसिद्ध गायक हसमुख पाटडियाने अपने सुमधुर कंठ से कीर्तन गाकर सभी को मंत्रमुग्धकर दिया था। अन्त में सभी महाप्रसाद लेकर स्वस्थान गमन किये।

मुख्य हाल के नीचे केन्टीन के बगल में ब्रह्म भोजन का आयोजन किया गया था। २५० जितने ब्राह्मणोने शुद्ध श्लोक उच्चारण करके वातावरण को पवित्र बना दिया था। इसके साथ ही संप्रदाय के सन्त भी महाप्रसाद को ग्रहण किये थे। उसके बाद म्युजियम के पीछे वाले भाग में हरिभक्तों के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। बाद में एक दूसरे से मिलकर सभी कार्यक्रम का पूर्ण लाभ लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे। (प्रफुल खरसाणी)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची (फरवरी-२०१२)

ता. ७-२-१२	पटेल पूनमभाई मगनभाई, अहमदाबाद
ता. १२-२-१२	श्री नरनारायणदेव मंडल, हीरावाडी, वती महेन्द्रभाई
ता. १४-२-१२	पटेल केशवलाल जेठीदास, भाउपुरा, पटेल कल्पेश केशवलाल, पटेल अशोकभाई केशवलाल।
ता. १५-२-१२	सुहागिया चंपाबहन भानुभाई, मेमनगर सुहागिया सुखदेव भानुभाई, वती परिताबहन सुखदेवभाई
ता. २४-२-१२	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के वार्षिक उत्सव के प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव का अभिषेक तथा महापूजा।
ता. २८-२-१२	चौहाण चंदुभाई रवजीभाई, धोलका वती ब्रह्मचारी स्वा. राजेश्वरानंदजी।

अभिप्राय

जयश्री स्वामिनारायण ..... प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन में दिव्य आनन्द की अनुभूति हुई । अन्त काल में इन प्रसादी की वस्तुओं में से एककाभी स्मरण हो जायेगा तो कल्याण निश्चित है । अहमदाबाद के आंगन में ऐसे दिव्य म्युजियम का दर्शन करने लायक है। (अनील एम. पाटडीया

इसके पहले इतनी संख्या में महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन सम्भव हुआ । इसके साथ ही यहाँ पर प्रसादी की वस्तुओं के रख रखाव की व्यवस्था बड़ी दिव्य है । वस्तुओं का संग्रह व्यवस्थित किया गया है । महाराज के समय कालीन उनके द्वारा जिनवस्त्रों का या जिनवस्तुओं का उपयोग किया था यहाँ दर्शन के समय प्रभु का वह स्वरुप प्रकाशित हो उठता है । यह म्युझियम बहुत उत्तम कलाकृति से बनाई गयी है। (घनश्याम पी. गोटी)

भगवान स्वामिनारायण ने सर्वप्रथम अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव का भव्य मंदिर का निर्माण करवाकर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का जब तक सूर्य-चन्द्र रहेंगे तब तक भजन भक्ति के लिये मुख्य स्थान बना दिया । इसी तरह श्री स्वामिनारायण म्युजियम का निर्माण करवा कर प.पू. बड़े महाराजश्रीने बड़ा उपकार किया है । इन दोनो में से किसी एक स्थान के प्रसादी की वस्तुओ का अन्तकाल में स्मरण हो जाय तो अक्षरधाम का मार्ग सरल हो जायेगा । म्युजियम के निर्माण से सारा सम्प्रदाय तथा मेरा परिवार प.पू. बड़े महाराजश्री का ऋणी रहेगा ।

(रुपमबहन गौतमभाई सांगणी)

भुजधाम से निकलकर पूरे भारत की तीर्थयात्रा करके अक्षरधाम तुल्य इस म्युजियम का जब दर्शन किया तो दर्शन की पूर्णता समझमें आयी । इस स्थान का मूल्यांकन कोई नहीं कर सकता । ऐसे तीर्थराज का निर्माण करने वाले प.पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन ।

(साधु ईश्वरस्वरुपदास, स्वा. पुरुषोत्तमचरणदास, स्वामी संतजीवनदास, स्वा. न्यालकरणदास, स्वा. श्यामकृष्णदास, पा. परेश भगत, हरजीभाई छभाडीया, हरजीभाई सोनी, मेथाडिया हरजीभाई, भेगणी करसन ।)

इस म्युझियम का दर्शन करने से महाराज की स्मृति हो गई तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के बाल्यावस्था के दर्शन का खूब सुख मिला। (नीताबहन सां.यो. पीपलाणा)

I read Satsangi Jeevan, Shikshapati, Gopalanand Swami ni Vato, and many books of Swaminarayan Bhagwan, but it given me only reading knowledge here in the this museum I so many things of Prasadi. Really a good museum, with Darshan we experience divine authority of Shreeji Maharaj thank for guidance to the guide.

(Pri. Shantilal A. Patel)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली (फरवरी-२०१२)

- रु.५१,०००/- डी.के. स्टील, अहमदाबाद
- रु.५१,०००/- रमीलाबहन शान्तिलाल दरजी, सादरा-वासणा
- रु. ३०,०००/- करशन देवजी राबडिया, रामपरवेकरा-कच्छ
- रु.२५,०००/- अ.सौ. गीताबहन महेन्द्रभाई पटेल (आसूलावा), उवारसद
- रु.२१,०००/- को. श्री स्वामिनारायण मंदिर, उवारसद
- रु.२१,०००/- जगदीशभाई डुगराणी, सूरत
- रु.११,१११/- अ.नि. रशिताबहन बिपीनभाई पटेल, उवारसद, वती बिपीनभाई भाईलालभाई पटेल
- रु.५,००१/- अमृतलाल जेठालाल काछिया, भायंदर (वेस्ट) जि. थाणा
- रु.५,००१/- अ.नि. अमृतलाल प्रभुदास मिस्त्री, जकासण वती महेन्द्रभाई मिस्त्री
- रु.५,००१/- अ.नि. काछिया पटेल परसोत्तमदास जीवराम वती दिनेशभाई लुणगवाला,
- रु.५,००१/- अ.नि. काछिया पटेल धनलक्ष्मीबेन परसोत्तमदास वती अल्काबहन दिनेशभाई, लूणावाला
- रु.५,००१/- निरुबहन भाईलालभाई पटेल, भात, ता. दस्क्रोई
- रु.५,००१/- विरजी लालजी राठोड (वती भूपेन्द्रभाई), जीरागढ
- रु.५,००१/- पीनाबहन नवीनभाई पटेल, चि. वचन के जन्मदिन के उपलक्ष्य में
- रु.५,०००/- हिरेन प्रागजीभाई काथरोटिया, बापूनगर

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संगबालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

पादरावाले को चमत्कार दिखायें

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

आज हम एक नई वात वांचते हैं। स्वार्थ वाली बुद्धि में कभी सदभाव नहीं होता। स्वार्थी जीव तो भगवान को भी बन्धन में रखना चाहता है। परंतु भगवान तो जगत के नाथ हैं वे भक्त के प्रेम के बन्धन में बंधते हैं। उन्हें कोई सत्ता प्रतिबन्धित नहीं कर सकती।

बात है बडोदरा के पास पादरा गांव की। यहाँ पर कर्णजीत नाम के राज ा रहते थे, उन्हें पता चला कि भगवान स्वामिनारायण यहीं से जाने वाले हैं।

कर्णजीत राजा स्वामि नारायण भगवान को कभी देखे नहीं थे लेकिन उन्हें यह पता चला कि स्वामिनारायण के पास बहुत सम्पत्ति है। इसी लिये तो अलग-अलग स्थानों पर यज्ञ करते रहते हैं। यज्ञ में ब्राह्मणों को खूब दक्षिणा देते हैं। लोग इन्हीं कई कारणों से उन्हें भगवान की तरह पूजते है। यह संयोग से अवसर मिल रहा है, उन्हें अपने महल में पदार्पण कराकर उनके शिष्यों के पास अपार सम्पत्ति हैं इन्हीं के माध्मय से गंगा में नहाने का अवसर मिल सकता है। पदार्पण कराने का शुभ आशय नहीं था। मनसा तो खराब थी। फिर भी वह बड़े उत्साह के साथ गाजेवाले के साथ दरबारियों को साथ लेकर पादरा गाँव के बाहर स्वागत के लिये गया, और महाराज से प्रार्थना किया कि आप मेरे महल में पधारकर हमें कृतार्थ करें।

प्रभु तो ''मनकी जाने तन की जाने, जाने चितकी चोरी'' यह सब उन्हें खबर थी सारा संसार प्रपंच है फिर भी कल्याण करने की दृष्टि से प्रभु ने हाँ कह दिया। महाराज संतो के साथ राजमहल में पधारे। वहाँ पर प्रभु का पूजन किया गया। सायंकाल हो गया था इसलिये महाराज सामने ही कहे कि राजन। हम सभी के ठहरने की व्यवस्था तथा खाने-पीने की व्यवस्था करनी होगी। राजा ने आज्ञा स्वीकार करके सभी प्रकार की उचित व्यवस्था करवा दी। राजा कर्णजित ने प्रभु से कहा कि प्रभु आप से हमें एक बात करनी है। अभी यदि आप एक लाख रुपये की व्यवस्था करके हमें दे तो कल आपको जाने देंगे – अन्यथा आप को नजर कैद कर देंगे। स्वामिनारायण भगवानने कहा कि हमारे पास इतना रुपया कहाँ से आयेगा। राजा ने कहा तब आप को नजर कैद रहना होगा। अपने पहरेदारों को बुलाकर कह दिया कि पहरा कड़क कर दो स्वामिनारायण यहाँ से जाने न पावें। यदि संत जाना चाहें तो जाने देना। ऐसा कहकर राजा कर्णजित अपने महल में रात्रि विश्राम के लिये चला गया।

प्रातः होते ही संत स्वामिनारायण – स्वामिनारायण कहते हुये जागे, प्रातः कालीन गीत गाने लगे। चौकीदारों से कहने लगे दरवाजा खोलो हमें बाहर जाना है स्नानादि क्रिया के लिये। राजा की आज्ञानुसार श्वेत वस्त्रधारी स्वामिनारायण को बाहर जाने से मना किया गया था। लेकिन रक्त वस्त्रधारी के लिये नियम नहीं था इसलिये ऊपर के अधिकारी के आदेशानुसार उन्हें जाने दिया गया।

इधर स्वामिनारायण भगवान ने भी एक नाटक किया एक साधु से कहे कि आप अपना रक्तवस्त्र हमें दे दीजिये। हम भी भगवा वस्त्र धारण करेंगे। वहीं भगवा वस्त्र धारण करके सभी के साथ बाहर निकल गये। सेवकों को था कि लाल कपड़े वाले जा रहे है, सफेद कपड़ा वाला स्वामिनारायण तो भीतर हैं।

प्रातः होते ही राजा बड़ी प्रसन्नता के साथ वहाँ आता है कि स्वामिनारायण यहीं होंगे और नजर बन्द स्वामिनारायण कितनी सरलता से एक लाख रुपये हमें अब देंगे। आकर देखा तो भीतर कोई नहीं था। अब वह क्रोधावेश में सभी चौकीदारों से पूछने लगा कि वे सब कहाँ गये, तब सेवकों ने कहा कि आपकी आज्ञानुसार हमने सफेद वस्त्रवालों को जाने दिया

लेकिन श्वेत वस्त्रवाला तो कोई नहीं गया। अब राजा हाथ मीजता ही रह गया और कहने लगा कि ५०-६० लोंगो को भोजन मेरे शिर पर पड़ा वह ऊपर से।

कुछ दूर जाने के बाद संतो ने पूछा महाराज ! आप वणिक को बचाने के लिये एक करोड़ रुपये दे दिये थे तो इसे एक लाख रुपये क्यो नहीं दिये ? तब महाराजने कहा कि वह वणिक मेरी भक्ति करता था और सन्त ने वचन दिया था, सन्त के वचन को रखने के लिये हमने एक करोड़ रुपये दिये थे, लेकिन यह राजा हमारा भक्त तो है नही, यदि इसे एक लाख रुपये दे दिये होते तो व्यसनादि में खर्च करता, अब जीवन भर मेरी याद करेगा। इससे इसका कल्याण होगा। यह चरित्र उसके कल्याण के लिये किया हूँ।

दूसरी वात यह भी कि श्रम के विना की संपत्ति कभी सुख नहीं देती। परिश्रम (पुरुषार्थ) से प्राप्त की गयी संपत्ति में ही सुख है। इस लिये तो हनुमानजी सोने की लंका को जला दिये थे। सोने की द्वारिका भगवान कृष्ण ने समुद्र में डुबो दी थी। इसलिये सुखी होने की जिसे चाहना हो वह जीवन में अवश्य श्रम करे। जो परिश्रम से मिलता है वह सुखदायक होता है।

●

करुणामूर्ति कृपा निधि

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

भगवान स्वामिनारायण सात वर्ष तक वन विचरण किये। वन विचरण के समय कितने तीर्थों को पावन किये। तप करते हुये कितने योगियों को दर्शन का सुख दिये। असुरों का दमन किये। तपमूर्ति नीलकंठ के नाम से प्रतिष्ठित हुये। वर्णीराज वन में विचरण करते हुये कितना दुःख सहन किये कितनी आपत्तियां आयीं। यह सब वर्णिराज के लिये साधारण वात थी। लेकिन एक घटना उनके लिये असह्य बनी थी।

वन विचरण करते समय वर्णीराज को एक दृष्य दिखाई दिया। एक राजा एक मृग का शिकार कर रहा था। वर्णिराज उसके पास जाकर कहे हे राजन् ! अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। जीव मात्र पर दया का भाव रखना चाहिये, निर्दोष पशुओं की हत्या नहीं करनी चाहिये। दया धर्म का मूल है।

''दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जब लग घट में प्राण॥

वह राजा मद में था, इसलिये वर्णी की वात अन सुनी कर दी। प्रकृति से अभिमानी था। जिससे प्रभु की एक बात भी नहीं मानी। समर्थ महा प्रभु सामने खड़े है, कितनो को समाधिस्थ कर दिये। समाधिमें भगवान ऐश्वर्य को दिखाए। प्रभु के धाम को दिखाये। सुख-शान्ति, पाप-पुण्य का फल दिखाये। कर्म के फल को दिखाये, नरक कुण्डको दिखाने में समर्थ प्रभु भी आज निर्दोष प्राणियों का बधकरने वाले राजा के इस क्रियाकलाप को देखकर द्रवित हो उठे। अनेकों मृगों का बधकरने वाले राजा से वर्णीराज ने कहा कि हे अभिमानी राजन् ! तूं इस हिंसा को छोड़ दे अन्यथा जिस राज्य के पद से राजा की पदवी को धारण कर रहा है। उससे वंचित हो जायेगा। यह सुनने के बाद भी वह समझ नहीं पाया। उधर वर्णी के मुख से एकाएक निकला कि ''राजा का नगर जल गया।''

इतना मुख से निकला ही था कि राजा का नगर क्षणभर में देखते - देखते जल कर राख हो गया।

क्षमा मूर्ति परमात्मा को यह दृश्य देखकर बड़ा दुःख हुआ। वह इसलिये कि एक राजा के पाप से समग्र नगर जल के खाक हो गया। दयालु प्रभु तुरंत ही दूसरा संकल्प किये कि आज से हमारा या हमारे संतो का श्राप कभी भी सत्य न हो। लेकिन किसी के सुख के लिये संकल्प किया जाय तो वह सत्य हो। परंतु श्राप किसी को दिया हो तो वह सत्य नहीं हो।

मित्रों ! आप लोग इसे पढे, आप लोगों को आनंद आया होगा। इसलिये भगवान तथा भगवान के संत कभी भी किसी का खराब नहीं चाहते है। सर्वदा प्राणी मात्र का श्रेय चाहते है। इसलिये जो भी श्रद्धा से भगवान की शरण में या संत की शरण में जाता है उसका सब कुछ अच्छा होता है। कभी अहित नहीं होता।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचनमें से -
"मायारुपी स्वप्न में से जागने की जरुरत है"
- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

भगवान की भक्ति में सबसे ज्यादा अडचनरुप क्या होता है ? 'माया' क्या है ? तो श्रीजी महाराज ने ग.प्र. के प्रथम वचनामृत में बताया है कि ''भगवान की मूर्ति का ध्यान करते समय जो पदार्थ मध्य में आये उसे माया कहते है।'' माया भगवान के भजन में बाधारुप बनती है माया दो प्रकार की बताई गयी है । (१) आवरण शक्ति (२) विक्षेप शक्ति । आवरण शक्ति जिसके सहारे ज्ञान ढंक जाता है जिससे ध्यान भटक जाता है, और जो चीज नहीं होती उसके होने का आभास होता है। अंधकार में रस्सी भी सांप लगती है आवरण शक्ति एक प्रकार का अंधकार है। जो सत्य, परमात्मा है उसका साश्वत सुख भूला देती है। और भ्रांति से जगत का क्षणिक सुख सही लगता है, हम माया रुपी स्वप्न में है। यदि किसी को स्वप्न आता है और स्वप्न में देखता है कि वह जंगल में है और उसे दश लाख रुपये मिले तो सुख की अनुभूति होती है। और पीछे बाघ पडता है तो दु:खी हो जाता है । जाग जाता है और उसे ख्याल आता है की ये स्वप्न की भ्रांती है। उसी प्रकार हमें संसार में सुख और दु:ख की अनुभूति होती है। फिर भी हम उसी के पीछे दौडते रहते है अर्थात् हम माया रुपी स्वप्न में ही दौडते रहते है। यदि हमे दु:ख नहीं चाहिए और शाश्वत सुख चाहिए तो मायारुपी स्वप्न से जागने की जरुरत है । इसलिए सत्य को प्राप्त करने के लिए जागृत रहना पडता है। जो मनुष्य संसार के सुख-दु:ख को तुच्छ मानते है उन्हे जागृत कहते है, संसार का सुख मीठा लगता है । जागृत मनुष्य को साश्वत सुख मिलता है। और सोने वाले मनुष्य को संसार मिलता है। अब विक्षेप शक्ति को समझते है। विक्षेप शक्ति से भगवान की भक्ति में विक्षेप पडता है। विक्षेप कैसे पडता है ? हमें भक्ति करने में अनुकूल तथा प्रतिकूल संजोग में विक्षेप पडता है। अनुकुल संजोगो में आलस आता है और वासना बढती है और अधिक प्राप्त करनेकी लालच होती है। प्रतिकूल परिस्थिति में दु:खी हो जाते है और सारा आरोप भगवान पर डालते है। मैं इतना भजन करता हूँ तो भी मुझे दु:ख क्यों ? कई लोग पूजा करना छोड देते है । लेकिन भगवान की पूजा करने के लिये इंतजार नही करते है। क्यों कि कौन जाने परिस्थिति कब बदलेगी जब समुंदर में नहाना हो तो तरंगो को सहना पडता है। इस बात का इंतजार नहीं कर सकते की समुंदर शांत हो जाये । वैसे ही दु:ख हमेंशा आता रहेगा । जैसे कितनी भी विकट परिस्थिति हो हम कर्म नहीं छोड़ते ? वैसे ही भजन भी नहीं छोड़नी चाहिये। अंत समय पर भगवान का ही नाम काम लगता है और माया न हो तो जीवन चक्र बंद हो जाता है। पृथ्वी पर जो उत्पत्ति, स्थिति और लय होता है उसके अधिष्ठाता देव ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो यह कार्य कते है। वह माया द्वारा होता है। माया जरुरी है, माता अपने बच्चे को जन्म देकर देखभाल न करे तो क्या होगा ? यदि परिवार में एक दूसरे के प्रति ममता न हो तो क्या होगा ? पूरा परिवार बिखर जायेगा। इसलिये माया तो संसार में आवश्यक है। एक बच्चे को माँ स्वार्थ बगैर पालती है। ये माया अलग है मां बच्चे की खूब चिंता करती है। लेकिन अत्यधिक हानि पहुंचाति है। सामान्य माया का अर्थ हर जिम्मेदारो को पूरा करना है। माया से अलिप्त रहने के लिए क्या करगें। निर्मोही बन कर रहेंगे। हमारे घर पर पंछी आते है । दाना चुग कर चले जाते है । गाय, कुत्ता आता है, रोटी खा कर चला जाता है। पश्चात हम पूरे दिन याद नहीं करते । जैसे बेटी ससुराल जा कर माईके की जीवनशैली भूल जाती है उसी प्रकार किसी भी वस्तु की आशक्ति नहीं रखना चाहिए । संसारी मनुष्य को प्रत्येक वस्तु में आशक्ति रहती है । और उसी में बंधजाता है । इसलिए जाग्रत रहने को कहते है क्योंकि माया बड़े बड़े मनुष्य का पतन करवा देती है। इसलिए इच्छा और कर्म

शुद्ध रखना । अपनी जिंदगी का लक्ष्य क्या है ? हमें कहाँ जाना है ? क्या प्राप्त करना है ? यदि हम ऐसी इच्छा करते हैं कि हमे परमात्मा को प्राप्त करना है तो हम कर्म भी उसी प्रकार करें गे और अपनी मंजिल पर पहुंचने का प्रयत्न करेंगे । हमारी मंजिल परमात्मा को प्राप्त करने की है तो माया से बचने के लिए परमात्मा का दास बनना पडेगा । खुद भगवान ने कहा है जो माया से बचने के लिये मेरी शरण में आता है माया से मै दूर कर देता हूँ । तो सदा श्री नरनारायणदेव की शरण में रहना और पूर्ण मन से उनकी भक्ति करना ।

●

मनुष्य का मन मोक्ष परायण कैसे बने ?

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

श्रीमद् भगवत गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते है कि मन का निग्रह करना चाहिये । मन आत्मा का मित्र है । यदि मन का सही उपयोग न किया जाये तो खराब रास्ते वाला आत्मा का शुत्र बन जाता है । अर्थात् आप ही अपने मित्र हैं और आप ही अपने शत्रु । भोजनलाय की छुरी से सब्जी काटते है और उसका दुरुपयोग भी हो सकता इसलिए छुरी आपकी मित्र भी है और शत्रु भी इसलिए मनका निग्रह करना । संयमी मन आत्मा का मित्र है । और तृष्णा वाला मन आत्मा का शत्रु है ।

''मन एव मनुष्याणां कारणंबंधमोक्षयो: ।'' मनुष्य का मन ही उसे जन्म-मरण के चक्कर में फंसाता है और मोक्ष भी दिलाता है । इसका कारण यही है कि भगवान ने पहले दिन बनाया और फिर मन । मन तन का बीज है । जैसा बीज होगा वैसा पेड़ उगेगा । और वैसे ही फल बनता है । जिस तरह मनुष्य का मन जगत में घूमता रहता है, उसी तरह भगवान में लग जाये तो मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

बाल्या अवस्था से अच्छे संस्कार हो तो युवावस्था या वृद्धावस्था में भजन भक्ति करने में सहायक बनता है । भजन-भक्ति के माध्यम से अंतिम समयमें भगवान की याद बनी रहती है और उस जीव को भगवान स्वयं लेने आते है । जो लोग संसार के विषय वासना में फंसे रहते है वे मोक्ष से वंचित रह जाते है ।

एक महिला भगवान का अखंड स्मरण करती थी और मन जगत परायण था जब अंत समय आया तब श्रीहरि खुद लेने आये और परीक्षा लेने हेतु चुडेल दिखाई दी । चुडेल शब्द कर रही थी । वह देखभाई को ख्याल आया कि शब्द ठीक से नही कर रही चलो इसे सीखा देती हूँ । यहाँ मन का निग्रह नहीं हो पाया था और वह बोली मुझे उसके पास जाने दो मुझे उसको सिखाना है । तब महाराज बोले वहाँ जाओ लेकिन हजारो वर्ष उसके साथ रहना पडेगा । फिर भी वह बाई गई और मोक्ष से वंचित रह गई । श्रीजी महाराजने कहा ।

''मारा जनने अंतकाले, जरुर मारे आववुं,
बिरुद मारुं ए न बदले, ते सर्वे जनने जाणवुं ।''

(भक्ति चिंतामणी प्र. ३८)

श्रीजी महाराज का वचन है वे अपने भक्त को लेने जरुर आते है । किंतु वासना से जीव निर्वासनिक हो किन्तु धर्मपरायण नहीं हो तो अपना जगत संबंधित राग हमारी अधोगति करवाता है । इसलिए भगवान की पूजा और संत समागम कर वासना दूर करनी चाहिए । जिससे वासना निर्मल हो जाये और मोक्ष प्राप्त हो ।

वडताल में श्रीजी महाराज सभा में बैठे थे । एक बार कोली हरिभक्त भगवान के लिए खीरा लाया था । उसके मन में हुआ मैं खा जाउ किन्तु मन पर काबु कर भगवान को अर्पण किया । श्रीजी महाराजने सभा में उस हरिभक्त की तारीफ की । ''इस भक्त का मन साधु जैसा है । इस भक्तने साधु की तरह मन को वश में करके खीरा मुझे दिया है । मैं इसका साधु जैसा कल्याण करता हूँ । इसलिए मन को जैसा बनायेंगे वैसा बनेगा । यदि मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है तो मोक्ष प्राप्त करने के लिए मन का निग्रह करना पडेगा ।

''दासना दास थइने, वणी जे रहे सत्संगमां,
भक्ति तेनी भली मानीश, रचीश तेना रंगमां ।''

श्रीजी महाराज कहते हैं कि मन को नवधा भक्ति में जोड दिया जाये तो मन भक्तिमय बन जाता है । इसिलिए

''मन को सत्कार्य में लगाओ। मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। मन पंच विषय में डुबाता है मन बंधन का कारणभी है। यदि सत्कार्य में मन लगा और भक्ति में लगे तो मोक्ष का कारण बनता है। मन अभ्यास से वश में होता है। अभ्यास अर्थात् नियममें रहना। जैसे आँख से प्रभु का दर्शन करना चाहिए, दृष्टि को स्त्री, रमणीयस्थानों को देखने में आशक्त नहीं रखना चाहिए। यदि मन मुलायम स्पर्श चाहे तो उसे नहीं मानना। कान को फिल्म के गाने सुनने नहीं देता। नाक को सुंदर गंध सूंधने नहीं देना। इस प्रकार नियम का अभ्यास करने से मन भक्ति में लगा रहता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जिनका शरीर बिगडता है उनका जन्म बिगडता है और जिनका मन बिगडता है उनके तो कई जन्म बिगड जाते है। बिगडा हुआ शरीर बन जाता है क्योंकि, उसका इलाज है लेकिन बिगडी हुई आत्मा का कोई ईलाज नहीं है प्रभुने पवित्र आत्मा देखी है औ मन देखा है। प्रभुने शबरी का तन या कपडा या जात नहीं देखी, विदुर की झोपड़ी नहीं देखी केवल मन देखा था और आत्मा देखी थी।

●

सच्चा सुख श्रीहरि के चरण में है

- सांख्ययोगी गीताबा (विरमगाम)

जगत में सभी को सुख प्रिय है। दुःख तो किसी को नहीं चाहिये। दुःख दूर करने के लिए सभी प्रयत्न करते रहते हैं फिरभी दुःख सामने से आता है। एक महात्माजी थे, वन में रहकर तप करते थे। लेकिन एक दिन उनके मन में हुआ कि जंगल में मैं रहता हूँ इसलिये मेरे पास कोई नही आता। अब वे अयोध्या के वन में से गाँव में आ गये। वहाँ एक हनुमानजी का मंदिर था उसी में सेवा पूजा करते। वह मंदिर भी गाँव से थोड़ा दूर था इसलिये कोई नही आता था। वे दुःखी के दुःखी ही रहे। सुखिया कौन है इसकी खोज में निकल पड़े। शहर में आये। एक बड़ा बंगला देखे उन्हें हुआ कि यह सबसे अधिक सुखी होगा। बंगला के पास खड़े रहे। शेठ महात्मा को देखकर अपने बंगले में बुलाया और आवभगत किया। बाद में महात्मा जी ने शेठ से पूछा कि आप सुखी तो है न ? यह सुनते ही वह शेठ रोते हुये कहा कि महात्माजी हम धनदौलत से खूब सुखी है, लेकिन घर में सन्तान नहीं है। संसारी घर संतान से सुखी होता है।

वहाँ से महात्माजी आगे चले। एक सोने की बड़ी दुकान देखे, उससे पूछे कि भाई, आप सुखी तो है न ? यह सुनते ही दुःखी मन से शेठ ने कहा कि महात्माजी हमारे पास गाडी-बंगला पत्नी है दो पुत्र भी हैं लेकिन दोनो पुत्र बड़े दुष्ट है, आज्ञाविरुद्ध आचरण करते है, मेरे सामने झगड़ते है। मुझे पागल कहते हैं।

वहाँ से भी महात्माजी चल दिये। नगर शेठ के पास गये। नगर शेठ ने खूब स्वागत किया। उसकी जाहोजलाली देखकर महात्माजी समझे कि यह सबसे सुखी होगा। महात्माजीने शेठ से पूछा कि आप सुखी तो हैं न ? यह सुनकर शेठ ने कहा कि सभी प्रकार से हम सुखी है लेकिन मुझे करीब १० वर्ष हो गया लकवा से पीड़ित हूं। ऐसा कहकर रोने लगे। अब वे चिन्तित हुये कि फिर सुखी कौन होगा ? वे शेठ से कहने लगे कि में जहाँ जाता हूँ वहीं सभी दुःखी दिखाई देते हैं। यह सुनकर शेठने कहा कि गाँव मैं सभी लोग कहते है कि गाँव के बाहर वाले हनुमानजी के मंदिर में एक महात्माजी आये है वे सबसे सुखी है। वे शान्ति से हरि स्मरण करते हैं, उन्हें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं। महात्माजी यह सुनकर आश्चर्य में पडगये कि मैं सुख की खोज में निकला हूँ यथार्थ मैं सुखी तो में ही हूँ। मानसिक शान्ति पूर्वक भगवान का स्मरण करता हूँ। प्रभु का ध्यान-भजन-भक्ति करता हूँइसी में सच्चा सुख है।

तुलसीदासजीने कहा है -

सुरुपुर नरपुर नागपुर, इन तीनो में सुख नाहीं।
का सुख हरि के चरण में का सुख सन्तन मांहि॥

सुख तो केवल संतो के साहचर्य में है या हरि की भजन में है अन्यत्र अर्थात् जगत में सुख कहाँ ?

इसलिये श्रीहरि द्वारा प्रतिष्ठित देव, मंदिर, आचार्य, संत, सत्संग, श्रीहरि द्वारा मान्य ग्रन्थ में ही सुख है।

भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रतिष्ठित मूंलगादी संस्थान को छोड़कर इधर उधर भटकने में भी सुख नहीं है। एक निष्ठा में सुख है।

सत्संग समाचार

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९० वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

सर्वावतारी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने संप्रदाय में प्रथम श्रीनगर अहमदाबाद में मंदिर का संकल्प किया तथा एरंड साहबने पाठकवाडी के रुप में (वर्तमान में जहाँ मंदिर है ।) सुप्रसिद्ध स्थान जो महाराजने पसंदकी थी उस भूमि पर मंदिर निर्माण हेतु ताम्रपत्र पर पक्का दस्तावेज सहजानंद स्वामी के नाम से अर्पण कर दिया । जहाँ महाराजकी आज्ञा से स.गु. आनंदानंद स्वामीने शिल्प स्थापत्य रुप मंदिर का निर्माण करवाया था । सं. १८७८ फाल्गुन शुक्लपक्ष-३ को सर्वोपरि श्रीहरि ने भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा करके मोक्ष तथा कल्याण के द्वार खोल दिए थे । श्रीजी महाराजने श्री नरनारायणदेव के दर पर बैठकर हजारो हरिभक्तों की तरफ देखकर कहा कि इस स्वरुप में और मुझ में कोई फर्क नहीं है। श्री नरनारायणदेव का १९० वाँ पाटोत्सव महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन तथा प्रेरणा से पाटोत्सव के यजमान अ.नि. प.भ. महासुखलाल जेठालाल सोनी, अ.नि. प.भ. ताराबहन महासुखलाल सोनी परिवार के प.भ. जीतेन्द्रभाई महासुखलाल सोनी (पाटणवाले), श्री धीरेनभाई, श्री अल्केशभाई, श्री मितेषबाई आदि परिवारने अलौकिक लाभ लिया था।

इस पाटोत्सव के उपलक्ष्य मे पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, भुज (कच्छ) के संतो की प्रेरणा से स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत धीरजाख्यान पंचान्ह पारायण गाँव सुखपर (कच्छ) में अ.नि. प.भ. हिरजीभाई, देवजीभाई हिराणी, अ.नि.प.भ. रतनभाई हिरजीभाई हिराणी, अ.नि. प.भ. जयंतीभाई धनजीभाई हिराणी के स्मरणार्थ हेतु पूरबाई जयंतीभाई हिराणी, प.भ. धनजीभाई हिरजीभाई दनजीभाई हिराणी, जसुबहन प्रेमजीभाई हिराणी, जगदीशभाई धनजीभाई हिराणी, भावनाबहन जगदीशभाई हिराणी (पौत्र कल्पेश, नारायण, तेजश) आदि परिवार के यजमान पद पर तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. पुराणी (कथाकार) धर्मजीवनदासजी की संहिता पाठ में बिराजमान थे । पांच दिन तक यजमान परिवार तथा श्रोतागण को वक्ता महोदय ने कथारस में तन्मय कर दिया था । पाटोत्सव के यजमान परिवार ने ता. २३-२-१२ को सुबह ८-०० से शाम को ५-०० तक महापूजा तथा श्रीहरियाग का अलौकिक लाभ दीया था ।

फागुन शुक्ल पक्ष३ को प्रातः ६-३० बजे श्रीहरि के ६ठ्ठे, ७ वे, ८ वे, वंशज धर्मकुल परिवार के वरद् हाथों से श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार महाभिषेक शास्त्रोक्त तथा विधिपूर्वक उमंग तथा उल्लासपूर्ण सम्पन्न हुआ । पाटोत्सव के यजमानो की बड़ी लाईन है । परंतु भगवानने जिनका नाम पहले तय किया होगा उनका नाम पहले आयेगा । प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव तथा पारायण के यजमानोने प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजनअर्चन करके आरती की थी उसी प्रकार हवेली में भी यजमान परिवार की बहनो ने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीलाश्री तथा पू. श्रीराजा का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

दिव्यतम सभा में पू. महंत स्वामीने मंगल उद्बोधन करके पाटोत्सव के यजमान तथा पारायण के यजमानो की सेवा की प्रशंसा की । सभा संचालन स.गु.शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया था ।

प.भ. जयेशभाई सोनी (गायक कलाकारश्री)ने कीर्तन भक्ति का सुंदर लाभ दिया था । प्रासंगिक सभामें स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, स.गु.शा.स्वा. आनंददासजी, शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी, ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी, शा. नारायणमुनि स्वामी तथा शा. स्वामी अभयप्रकाशदासजी आदि विद्वान संतोने परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य को कहा था ।

इस प्रसंग में स.गु.शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने भी सुंदर सेवा की । अ.नि.स.गु. ब्र. स्वा. दामोदरानंदजी कृत सुबोधसागर प्रकाशक ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी गुरु ब्र. स्वा. हरिप्रियदासजी) की हिन्दी आवृति जिस का परिमार्जन प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी के वरद् हाथों से हुआ है । जिसका विमोचन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुआ । ''वचनामृत में श्री नरनारायणदेव'' जिसे प.पू. बड़े महाराजश्रीने स्वयं हस्ताक्षर में संकलित किया है । यह पुस्तिका जो प.भ. परीख के सहयोग तथा सौजन्य से हमारे मंदिर द्वारा प्रकाशित की गई है । उसका विमोचन प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से किया गया । पू. ब्र. राजेश्वरानंदजी स्वामी तथा प.पू. महाराजश्रीने

आशीर्वाद दिये।

अंत में यजमान परिवार को तथा सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव का दृढ़ आश्रय रखने का आग्रह किया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की।

इस प्रसंग की सेवा में कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, भंडारी सूर्यप्रकाशदासजी, योगी स्वामी, बलदेव स्वामी, नटु स्वामी, आदि संत मंडल तथा अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणात्मक थी। श्री नरनारायणदेव के सुवर्ण सिंहासन में कई हरिभक्तों ने अपनी सेवा दी। – नारायणमुनि स्वामी

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के प्रांतिज श्री स्वामिनारायण मंदिर में रजत शताब्दी महोत्सव मनाया गया। (१२५ वर्ष)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज के ठाकुरजी का रजत शताब्दी महोत्सव ता. ६-५-१२ से ता. १०-५-२०१२ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण, धर्मकुल दर्शन, श्री महाविष्णुयाग तथा श्री धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज तथा श्री राधाकृष्णदेव का महाभिषेक, छप्पन भोग अन्नकूट आदि प्रसंगो को धूमधाम से मनाया गया।

– महंत स्वामी, प्रांतीज

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९० वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कुंडल के कलाभगत के वंशज प.भ. अमृतभाई सेंधाभाई पटेल चि. मनोजभाई तथा चि. राकेशभाई परिवारने यजमान पद पर श्री घनश्याम महाराज, धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज का १६ वाँ पाटोत्सव कृष्णपक्ष-५ को धूमधाम से मनाया गया।

प्रातः ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक वेद विधिपूर्वक किया गया। उसके बाद श्रृंगार तथा अन्नकूट आरती प.पू. आचार्य महाराजश्री ने की थी। उसके बाद सभा में पधारे।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का अर्चन पूजन-आरती की . स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत शा. पी.पी .स्वामी आदि संत मंडलने देव तथा धर्मकुल की महिमा समझाया । स.गु. स्वामी रामकृष्णदासजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरुदासजी, पूजारी बालु स्वामी आदि संत मंडलने तथा श्री नरनारायणेदव युवक मंडलने (नारायणघाट) खूब सेवा की थी। – शा. दिव्यप्रकाशदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में तीसरा पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से महान भक्तराज कशलीबाई की प्रेमभक्ति के वश होकर श्रीहरिने एकादशी को खीचडी का दातुन करवाया था। ऐसी पवित्र भूमि मेहसाणा मंदिर में बिराजमान श्रीनरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री घनश्याम महाराज आदि देवों का तृतीय वार्षिक पाटोत्सव कृष्णपक्ष-२ को धामधूम से मनाया गया।

पाटोत्सव प्रसंग के उपलक्ष में ता. ७-२-१२ से ता ९-२-१२ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्री पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ की त्रिदिनात्मक कथा पूज्य स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) ने की। इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग का आयोजन किया गया। जिस में ७५ यजमानोने जेतलपुर में यज्ञो का महालाभ लिया।

ता. ८-२-१२ को ठाकुरजी का राजोपचार विधिपूर्वक किया गया। जिस में ठाकुरजी को अलंकार, वस्त्र, छत्र, चरम, छडी, गाय, हाथी, घोडे आदि यजमानश्री की तरफ से अर्पण किया गया।

कृष्णपक्ष-२ ता. ९-२-१२ को ठाकुरजी की मंगला आरती के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । महाभिषेक विधिपूर्वक षोडशोपचार पूर्वक किया गया। हजारो मुमुक्षुओंने पधारकर महालाभ लिया।

प.पू. आचार्य महाराजश्री अभिषेक विधिकरके यज्ञशाला में पधारे। श्रीयज्ञ नारायणदेव के सामने विराजमान होकर यज्ञ में घी तथा श्रीफल से आहुति देकर पूर्णाहुति की आरती की। तथा सभा में पधारे । मंदिर के महंत स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का स्वागत पूजन किया था। संपूर्ण पाटोत्सव के यजमान प.भ. रणछोडभाई लालजीभाई पटेल (महेसाणा) चि. सुपुत्र डॉ. आशिषभाई तथा वैभवभाईने प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये। प्रासंगिक सभा में जेतलपुर, माणसा, जयपुर, कांकरिया, ईडर, अहमदाबाद, लालोडा, प्रांतिज, तथा शोकली आदि स्थानों से ब्रह्मनिष्ठ संतोने अमृतवाणी का सुंदर लाभ दिया था । अंत में धर्मगुरु रुप श्रीहरि के अपर स्वरुपने अपने आशीर्वाद दिये। सभा

में आगामी ६ वर्ष के वार्षिक पाटोत्सव के यजमान पद का लाभ लेने वाले को प.पू. महाराजश्रीने प्रसन्नता से हार पहनाकर आशीर्वाद दिये।

समग्र महोत्सव का आयोजन पू. स.गु.शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से महंत स्वामी, के.पी. स्वामी, रामेश्वर स्वामी तथा वयोवृद्ध श्याम स्वामी के मार्गदर्शन से किया था । सभा संचालन शा.स्वामी देवस्वरुपदासजीने (जयपुर महंतश्री(ने किया। उत्तर गुजरात के सभी भक्तोने दुर्लभ दर्शन किये।

– पूजारी रामेश्वरदास

बापुपुरा गाँव के मंदिर का ३१ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी तथा स.गु. देव स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा का ३१ वाँ पाटोत्सव मनाया गया । धीरजाख्यान पंचदिनात्मक रात्री पारायण स.गु.शा.स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर ता. ४-२-१२ से ता. ८-२-१२ तक की गई। इस प्रसंग में अहमदाबाद से प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारकर दर्शन आशीर्वाद दिये।

पूर्णाहुति के दिन ता. ८-२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तब भव्य शोभायात्रा निकाली गई । शोभायात्रा यहाँ के भाईओं के मंदिर में आकर रखी थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने भाईयों-बहनों के मंदिर में अन्नकूट की आरती करके सभा में पधारे थे। जहाँ कथा की पूर्णाहुति आरती करके की गई । ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, स.गु. शा. घनश्याम स्वामी, स्वामी श्रीवल्लभदासजी आदि संतो ने आशीर्वाद दिये।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने गाँव के समस्त सत्संग समाज को तन, मन, धन से सेवा करने हेतु आशीर्वाद दिये। इस प्रसंग में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सेवा की । सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

– स्वामी ऋषिकेशप्रसाददास, इसंड

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण में धूमधाम से पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव गादी के मोखासण श्री स्वामिनारायण मंदिर के मुख्य प्रवेशद्वार में विशाल चोक में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से प.भ. रमणलाल ईश्वरदास पटेल के संकल्प से उनके चि. पुत्र महेशकुमार (अमेरिका) के तरफ से बंसीपुर में पत्थर से बनी माणकी घोड़ी पे सवार श्रीजी महाराज की प्रतिकृति का उद्घाटन समारोह तथा दोनो मंदिर का पाटोत्सव शुक्लपक्ष-१३ ता. ५-२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. ३-२-१२ से ता. ५-२-१२ तक श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य त्रिदिनात्मक पारायण स.गु.शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर मंदिर महंतश्री) तथा स.गु.शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर मंदिर कोठारी)ने कथामृत का पान करवाया।

कथा के प्रारंभ प.पू. बड़े महाराजश्री ने किया। कथा प्रसंग में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप, गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी।

ता. ५-२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे तब शोभायात्रा का आयोजन किया गया । शोभायात्रा मंदिर पहुँची वहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अन्नकूट की आरती की । उसके बाद सभा में पधारे श्री रमणलाल ईश्वरदास, श्री गोविंदभाई ईश्वरदास, कोठारी भगवतभाई ईश्वरदास, श्री शैलेषकुमार (अमेरिका), जीगरकुमार, विरलकुमार, धवलकुमार, माजी कोठारी गोविंदभाई, श्री रसिकभाई, अंबालाल, श्री सोमाभाई त्रिभोवनदास (अमेरिका) आदि हरिभक्तोने प.पू. आचार्य महाराजश्री का स्वागत किया था।

स.गु.शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंतश्री कालुपुर मंदिर), शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर), स.गु. शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने प्रवचन किया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये।

– महंत शा. नारायणवल्लभदासजी, वड़नगर

प्रसादी स्वरुप मोटेरा गाँव में श्री शिक्षापत्री भाष्य नवान्ह पारायण (रात्रीय) तथा भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से मोटेरा गाँव में श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य नवान्ह (रात्रीय) पारायण तथा भव्य शाकोत्सव स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर ता. २४-१२-११ से ता. १-१-१२ तक धूमधाम से मनाया गया।

प.भ. रमणलाल मणीलाल पटेल, ह. पियुषभाई तथा मनुभाई (मोटेरा) के मुख्य यजमान पद पर पारायण का आयोजन किया गया। उस में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पूर्णाहुति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट महंतश्री देव स्वामी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी आदि संतगणोने पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया।

शाकोत्सव में ७००० भाविकोने लाभ लिया । श्री

नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, मोटेरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा (राजस्थान) में दशाब्दी महोत्सव मनाया गया

राजस्थान के श्रीनाथजी में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा वयोवृद्ध स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी की प्रेरणा से तथा महंत स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा में दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

महोत्सव में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधपंचान्ह पारायण ता. २८-१-२०१२ से ता. १-२-२०१२ तक स.गु.शा. स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (नारणपुरा महंतश्री) तथा शा. ऋषिकेश स्वामी के वक्तापद पर विधिपूर्वक संपन्न हुई। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । उनके हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक तथा अन्नकूट आरती की गई। प.पू. बड़े महाराजश्री ने त्रिदिनात्मक हरियाग तथा कथा की पूर्णाहुति आरती की।

प्रासंगिक सभा में पूजनीय संतोने अमृतवाणी का लाभ दिया। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये। सभा संचालन शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजीने किया था।

स.गु. स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स.गु. बलदेव स्वामी, मुकुंद स्वामी, विश्वप्रकाश स्वामी, आनंद स्वामी, कुंजविहारी स्वामी, नरेन्द्र भगत, गोविंद भगत, जीतु भगत, भरतभाई, गोपीचंद, जयदीप तथा विक्रम आदि संत पार्षदो तथा हरिभक्तोने सुंदर सेवा की।

- शा. विवेकसागरदास, नाथद्वारा

भीरपुरा गाँव के मंदिर का चतुर्थ पाटोत्सव तथा पंचदिनात्मक ज्ञानयज्ञ धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारायणघाट) की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल भीमपुरा तथा समस्त ग्रामजनो की सेवा सहयोग से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान राम-श्याम घनश्याम महाराज का ४ था वार्षिक पाटोत्सव तथा उसके उपलक्ष में श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वामी रामकृष्णदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर ता. २-२-१२ से ता. ६-२-१२ तक विधिपूर्वक मनाया गया।

पांच दिन तक गाँव के श्रद्धालुओने कथा श्रवण का लाभ लिया। ता. ६-२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे तब भव्य शोभायात्रा निकाली गई । सभा में पधारकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट आरती करके स्कुल में वृक्षारोपण किया। नूतन बाल सत्संग मंडल तथा बाल सत्संग मंडल के उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन ईनाम प.पू. आचार्य महाराजश्री ने दिया। प्रासंगिक सभा में स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद मंदिर महंतश्री) तथा ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी तथा शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी आदि संत मंडलने आशीर्वाद दिये।- बाबुभाई दलसंगभाई चौधरी, भीमपुरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर व्यास पालडी दूसरा वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर व्यास पालडी का दूसरा वार्षिक पाटोत्सव ता. १५-२-१२ को धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक रात्रिय कथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने की । पाटोत्सव के दिन अन्नकूटोत्सव मनाया गया। जिस में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. सूर्यप्रकाशदासजी, स.गु. देव स्वामी, स.गु. शा. पी.पी. स्वामी आदि संत मंडलने श्रीहरिकी लीला प्रसंगो का वर्णन किया । सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) ने किया था।

- बाबुभाई व्यास, पालडी

बारेजा श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

जेलपुर में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण की छत्रछाया में बारेजा गांव में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा जेतलपुर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा के.पी. स्वामी के आयोजन से पू. पी.पी. स्वामी ने १०० वर्ष पुराने मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर भव्य मंदिर का निर्माण करवाया। मंदिर पूर्ण होते ही ता. १५-२-१२ से ता. १७-२-१२ तक मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधत्रिदिनात्मक पारायण स.गु.शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी ने की। कथा का लाभ यजमान महिला मंडल बारेजाने लिया। अन्य सेवा के भी यजमान बने थे।

ता. १४-२-१२ से १७-२-१२ तक त्रिदिनात्मक विष्णुयाग अ.नि. प.भ. राव साहब परिवार के प.भ. योगीनभाई तथा प.भ. मयुरभाई के यजमान पद पर संपन्न हुई। इस प्रसंग पर बहनोके आग्रह से प.पू.असौ. गादीवालाश्री पधारी थी तथा बहनों को आशीर्वाद दिया । ता. १७-२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री पधारे तब शोभायात्रा के स्वरुप में स्वागत किया गया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से संगमरमर की श्री नरनारायणदेव, श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव, श्री निलकंठ वर्णी, श्री हनुमानजी, गणपतिजी की मूर्तिओं की प्राणप्रतिष्ठा वेद विधिपूर्वक की गई । यज्ञ की पूर्णाहुति करके अन्नकूट की आरती के बाद महाराजश्री सभा में पधारे।

सभा में कथा की पूर्णाहुति करके यजमान परिवार तथा उत्सव में सेवा करने वाले यजमानश्री का सन्मान किया गया। इस प्रसंग में अहमदाबाद, जेतलपुर, मूली, छपैया, जमियतपुरा, कांकरिया, महेसाणा, चराडवा, कलोल, जयपुर आदि स्थानो से संतोने पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये। मंदिर निर्माण कर्ता पूज्य स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) पर प्रसन्न होकर हार पहनाया था। मंदिर के कोठारी पद पर प.भ. मयुरभाई तथा प.भ. रश्मिनभाई पटेल को नियुक्त किया गया। हजारो हरिभक्तोंने इस प्रसंग का लाभ लिया। - महंत के.पी. स्वामी, जेतलपुर

वडथल मंदिर का पंचम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से वडथल गाँव मंदिर का ता. ३०-१-१२ को पंचम पाटोत्सव मनाया गया।

इस प्रसंग पर जेतलपुर से पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी, शा. घनश्याम स्वामी (माणसा महंत) तथा शा. भक्तिनंदनदासजी आदि संत मंडल के साथ पधारकर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट आरती करके सभा में शा. भक्तिनंदन स्वामीने कथा का रसपान करवाया था। उसके बाद पू. पी.पी. स्वामीने श्रीहरि की सर्वोपरि तथा धर्मकुल का दृढ आश्रय रखने को सुख की चाभी बताया था। ५०० जितने भाविक भक्तोने ठाकुरजी के दर्शन, संतो की अमृतवाणी का लाभ लिया।

- शा. भक्तिनंदनदास, कोठारी हरिकृष्णभाई

कुबडथल मंदिर का पंचम पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा पू.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से प.भ. कनुभाई मंगलदास पटेल (कुपडथल) परिवार के यजमानपद पर श्री स्वामिनारायण मंदरि कुबडथल का पंचम पाटोत्सव ता. १६-२-१२ को मनाया गया । इस प्रसंग पर जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी, शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (चराडवा) तथा स.गु. शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी आदि संतोने ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक करके अन्नकूट आरती की। तथा इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान तथा धर्मकुल का माहात्म्य कहा। तमाम हरिभक्तोने दर्शन का लाभ लिया।

- शा. भक्तिनंदनदास, जेतलपुर

धरियावद (राज.) मंदिर का सप्तम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा छपैया के महंत ब्र. स्वामी वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से धरियावद मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. २-२-१२ से ता. ४-२-१२ तक प.भ. अर्जुनसिंह परिवार के यजमान पद पर मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया।

ता. ४-२-१२ को मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव, श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक तथा श्रृंगार आरती के बाद अन्नकूट आरती आदि पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी आदि की उपस्थिति में धूमधाम से की गई।

प्रासंगिक सभा में पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा ब्रह्मचारी स्वामीने श्रीजी महाराज तथा धर्मवंशी माहात्म्य कहा।

ब्र. स्वामी वासुदेवानंदजीने धरियावद मंदिर निर्माण कर्ता पू. पी.पी. स्वामी को मेवाड़ी पघड़ी पहनाकर सन्मानित किया । यजमानश्री कों शाल ओढाकर स्वागत किया । मोरबी से सांख्ययोगी बहेने भी पधारी थी। सभा संचालन ब्र. पवित्रानंद तथा संत मंडलने किया। - शा. भक्तिनंदनदास तथा नटु भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजी की प्रेरणा से धनुर्मास में श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में धून, कथा, वार्ता (स.गु. निर्गुणदासजी स्वामी की वाते) तथा पूजारी स्वामीने ठाकुरजी को सुंदर वस्त्रो को पहनाकर दर्शन करवाये थे । सभी हरिभक्तों की तरफ से अन्नकूट तथा प.भ. पी.जे. पटेल परिवार की तरफ से शाकोत्सव मनाया गया।

उत्तरायण पर्व निमित्त पर शारदाबहन मणीभाई पटेल तथा डाहीबहन प्रभुदास पटेल (सलाल-अमेरिका) तरफ से सभी हरिभक्तों को भोजन प्रसाद दिया गया। जगदीशभाई ने सुंदर सेवा की। -अरविंदभाई टांक

मोडासा में हरिमंदिर का नवनिर्माण किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मोडासा में श्री नरनारायणदेव के पुनः एक शिखर का नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर निर्माण हेतु ता. ३-२-१२ को शा. स्वामी अखिलेश्वरदासजीने तुषारभाई (भूदेव) द्वारा खात मुहूर्त विधी

करवायी । इस विधिमें कोठारी श्री जयंतीभाईने यजमान पद का लाभ लिया । इस मंदिर का संपूर्ण मार्गदर्शन स.गु.शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजीने किया । - स्वा. सर्वेश्वरदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मातापुर (छाल) गाँव में श्री रामजी मंदिर में श्री हनुमान चालीसा की पंच दिनात्मक कथा शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) के वक्तापद पर हुई । कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर चौधरी भीखाभाई की तरफ से भोजन प्रसाद दिया गया । स्वामी चंद्रप्रकाशदास की प्रेरणा से दशरथभाई, लक्ष्मणभाई, अमरतभाई, हाथीभाई तथा नरसिंहभाईने सुदंर सेवा की ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर चौधरी

माणेकपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के २५ वर्ष पूर्ण होने पर २५ गाँवों में धून-भजन कीर्तन का आयोजन किया गया । प्रातः माणसा मंदिर में ठाकुरजी के सानिध्य में नरनारायणदेव युवक मंडलने धून-भजन कीर्तन किए । शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने रजत जयंती प्रसंग की रुपरेखा समझायी । प्रेमस्वरुप स्वामीने सुंदर व्यवस्था की ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, माणसा

बाकरोल मंदिर में तीसरा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. पू.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल (बुझर्ग) का तीसरा पाटोत्सव ता. १७-२-१२ को मनाया गया इस प्रसंग में महापूजा, ठाकुरजी का अन्नकूटोत्सव विधिकी गई । ठाकुरजी की शोभायात्रा निकाली गयी । जिसमें अहमदाबाद तथा जेतलपुर मंदिर के संतगण भी पधारे । सभा में स.गु.शा.स्वा. उत्तमप्रियदासजी (जेतलपुर) ने श्रीहरि का माहात्म्य कहा ।

- शा.स्वा. भक्तिनंदनदास, जेतलपुर

माधवगढ (ता. प्रांतिज) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ का १५ वाँ पाटोत्सव ता. ४-२-१२ को स.गु.शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी के मार्गदर्शन अनुसार किया गया । पाटोत्सव के यमजान प.भ. प्रभुदासभाई परसोत्तमदास पटेल थे ।

इस प्रसंग पर ठाकुरजी का पूजन, अभिषेक, महापूजा आदि शास्त्री स्वामी तथा संतोने किया ।

प्रासंगिक सभा में माणसा मंदिर के महंत शा.घनश्याम स्वामीने कथा वार्ता का लाभ दिया । शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा प्रांतिज मंदिर के मंहत स्वामीने उद्‌बोधन किया । अन्नकूट सेवा कोठारी चिमनभाई पटेल, भलाभाई पटेल, जसुभाई, सुरेशभाई तथा रसिकभाई सुन्दर सेवा की । यजमान परिवार की तरफ से प्रसाद दिया गया । सभा संचालन शा. सुखनंदनदासजीने किया । - शा. सुखनंदनदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से नांदोल श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव तथा शाकोत्सव ता. २९-१-१२ को प.भ. विनुभाई शंकरभाई के यजमान पद पर सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर पू. ध्यानी स्वामीके समस्त मंडलने कथावार्ता तथा ठाकुरजी का अभिषेक किया । ठाकुरजी की आरती के बाद संतोने शिक्षापत्री भाष्य कथा का रसपान करवाया । कोठारी विष्णुभाई तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की । - कोठारी विष्णुभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा का चौथा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायणंमदिर भाउपुरा का चौथा पाटोत्सव ता. २२-२-१२ को धूमधाम से मनाया गया ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से षोडशोपचार विधिकी गयी । समस्त गाँव वालोंने प.पू. बड़े महाराजश्री का धूमधाम से स्वागत किया । सभा में यजमान प.भ. बाबुभाई पटेल परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन, आरती की । पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. स्वा. जगतप्रकाशदासजी, महंत के.पी. स्वामी, उत्तम स्वामी, सर्वेश्वर स्वामी, विश्वेश्वर स्वामी आदि संतो का पूजन किया ।

पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी, स्वा. जगतप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने प्रवचन किया ।

- शा. भक्तिनंदनदास

●●● मूली प्रदेश का सत्संग समाचार ●●●

मूली मंदिर में वसंत पंमची को धूमधाम से उत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से भावि आचार्य प.पू.श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा मूली के महंत स.गु.शा.स्वा.

नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से मूली में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज आदि देवो का पाटोत्सव-शिक्षापत्री जयंती तथा रंगमहोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

शुक्ल पक्ष-वसंत पंचमी प्रातः ६-३० बडे ठाकुरजी का महाभिषेक विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। छप्पन भोग अन्नकूटोत्सव की आरती प.पू. लालजी महाराजश्रीने उतारकर हजारो भक्तजनो को दर्शन का महासुख दिया।

सभा में शिक्षापत्री जयंती प्रसंग पर शा.स्वा. वंदनप्रकाशदासजीने शिक्षापत्री का वांचन किया था। माणसा के महंत शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने कथामृत द्वारा सर्वोपरि भगवान की तथा धर्मकुल के प्रति स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के अनहद प्रेम की ऐतिहासिक बातें की। प.पू. लालजी महाराजश्री सभा में पधारे।

मूली के महंत स्वामीने मंगल उद्‌बोधन किया। प.पू. लालजी महाराजश्रीने प्रसन्न होकर यजमान परिवार तथा हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये।

दोपहर १२-०० बजे मंदिर के विशाल प्रांगण में भव्य मंच पर प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल तथा पार्षदो के साथ रंग खेलने पधारे थे। झालावाड, हालार, भाल विस्तार तथा दूर-दूर से धर्मकुल प्रेमी भक्तोने भी रंग से उत्सव मनाया। पू. लालजी महाराजश्रीने सभी भक्तों को दर्शन देकर प्रसन्न कर दिया।

समग्र व्यवस्था में कोठारी शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, मुक्तस्वरुपदासजी, नरोत्तम भगत थे। इस प्रसंग पर बहनो को दर्शन आशीर्वाद का सुख देने प.पू. लक्ष्मीस्वरुप अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा पधारे थे। - कोठारी स्वामी, मूली

मूली श्री राधाकृष्णदेव के सूर्यनगर बहनो के नूतन मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजीने तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारायणघाट) की प्रेरणा मार्गदर्शन से सूर्यनगर (हलवद) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) का मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. १९-२-१२ से ता. २५-१२ तक मनाया गया।

पू. संतो की प्रेरणा से सुंदर मंदिर का निर्माण पूर्ण हो गया। ग्रामजनो की आर्थिक सेवा तथा सहयोग से भव्य महोत्सव मनाया गया। प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। त्रिदिनात्मक यज्ञ, भव्य पोथीयात्रा, भव्य शोभायात्रा, नगरयात्रा, रात्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम, गाँव सफाई, व्यसन मुक्ति अभियान जैसे कार्यक्रम किये गए। प.पू. बड़े महाराजश्री भी पधारे थे। प्रसंग में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी पधारी थी। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे तब भव्य शोभायात्रा निकाली गई . पू. महाराजश्री बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा विधिकी। इस प्रसंग में संतगण भी पधारे थे। अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, मूली के महंत स.गु. नारायण स्वामी, कृष्णवल्लभ स्वामी, स.गु. श्रीजी स्वामी, स.गु. भक्तिहरि स्वामी, शा. सूर्यप्रकाश स्वामी आदि संत गण पधारे थे। पू. बड़े महाराजश्रीने भाईओं के नूतनमंदिर के संकल्प की घोषणा की। ४० मिनिट में २५ लाख रुपया नूतन मंदिर में सेवा के स्वरुप प्रदान किये। पू. बड़े महाराजश्री अति प्रसन्न हो गये। संतोने जल्द ही मंदिर बनाने की आज्ञा की। इस प्रसंग में सात दिन तक गांव वालों को भोजन खिलाया गया। समग्र आयोजन में ग्रामजन, समस्त सत्संग समाज, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, सूर्यनगर की सेवा प्रसंशनीय थी। उत्सव में स.गु.शा.स्वा. तथा स.गु. शा. वंदनप्रकाश स्वामीने व्यवस्थापक की जबाबदारी ली। समग्र सभा का संचालन स.गु.शा. पी.पी. स्वामी तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया। - नरसिंह भगत, सूर्यनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी तथा मूली मंदिर के महंत शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से यहां के महंत साधु भक्तवत्सलदास की प्रेरणा से श्री घनश्याम महाराज का २२ वाँ पाटोत्सव तथा श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण ता. ९-२-१२ से ता. १०-२-१२ तक शा. स्वा. वंदनप्रकाशदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुई।

रात्रीय कार्यक्रम में प.भ. गायक कलाकार श्री जयेशभाई सोनीने कीर्तन भक्ति का सुंदर कार्यक्रम किया।

ता. १०-२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने बालस्वरुप घनश्याम महाराज का महाभिषेक, अन्नकूट आरती तथा बहनो के तथा तपोवन मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी की आरती की। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

सभा में यजमानश्री सोनी शशीकांतभाई अमृतभाई तथा श्री घनश्यामभाई ओधवजीभाई परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती की। स.गु. महंत शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी, स.गु. स्वा. जगतप्रसाददासजी,

अहमदाबाद मंदिर के कोठारी जे.के. स्वामी, शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर), महंत शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी (जयपुर), वी.पी. स्वामी (कलोल महंतश्री) आदि संतो की प्रेरणावाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये। - सोनी नरेन्द्रभाई

●●● विदेश सत्संग समाचार ●●●

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत के.पी. स्वामी तथा डी.के. स्वामी की प्रेरणा से ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में माघ शुक्लपक्ष-४ को वचनामृत जयंती, उत्तरायण, मकर संक्रांति पर्व मनाया गया। २२ जनवरी को देसाई संजीवभाई हर्षिदाबहन । पटेल भीखाभाई प्रेमीलाबहन तथा पटेल गोविंदभाई मथुरदास (डांगरवाला) आदि हरिभक्तो की तरफ से ठाकुरजी का भव्य शाकोत्सव मनाया । इस प्रसंग पर आयोजित सभा में के.पी. स्वामी, डी.के. स्वामी, शिकागो मंदिर के निलकंठ स्वामी तथा किलवलेन्ड मंदिर के हरिवल्लभ स्वामी आदि संतोने वचनामृत पर विवेचन तथा शाकोत्सव, मकर संक्रांति का माहात्म्य विस्तारपूर्वक बताया। इस उत्सव में कई हरिभक्तोंने लाभ लिया।

आई.एस.एस.ओ. अमेरिका पियोरिया चेप्टर में सत्संग प्रवृत्ति

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से आई.एस.एस.ओ. के नये चेप्टर पियोरिया में हर रविवार को सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है। सभा में सत्संगी बच्चोने तथा युवानोने नंद संतो रचित कीर्तन भक्ति की। वचनामृत जयंती उत्सव मनाकर ठाकुरजी का पूजन आरती की। उत्तरायण - मकर संक्रांति को भगवान के सिंहासन को पतंगो से सजाया गया। वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन करके आरती की गई। सभी हरिभक्तोंने २१२ श्लोक का समूह वाचन किया। स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी, स.गु. नित्यानंद स्वामी तथा स.गु. गोपालानंद स्वामीके जन्मोत्सवों को पूजन करके मनाया गया।

- रमेशभाई पटेल, ह्युस्टन

लेकलेन्ड फ्लोरिडा (आई.एस.एस.ओ., अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर में शिक्षापत्री समूह पारायण तथा शाकोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से अमेरिका के फ्लोरिडा (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में २९ जनवरी को शिक्षापत्री समूह पारायण तथा शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

फ्लोरिडा मंदिर में २५ दिसम्बर को सभा में श्री शिक्षापत्री ग्रंथ का वेदोक्त पूजन करके प्रत्येक परिवारने श्लोक का पाठ करके उस दिन उपवास किया तथा ओकाला विस्तार में भी एक पोथी बनाकर हरिभक्तो ने ६६५ जितने पाठ ५८ परिवारोंने करके शिक्षापत्री की आज्ञा अनुसार श्रीजी महाराज के चरणों में प्रार्थना की। दोनो पोथी का वसंत पंचमी को मंदिर में समूह पूजन आरती की । शा.स्वा. योगीचरणदासने शिक्षापत्री तथा शाकोत्सव का माहात्म्य कहा । श्रीहरिकृष्ण महाराज को प्रार्थना की । ठाकुरजी समक्ष शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग में योगी स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की।५०० जितने भाविक भक्तोंने प्रसंग का लाभ लिया।

- नलिनभाई पटेल, कमिटी सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (आई.एस.एस.ओ., अमेरिका) में उत्तरायणपर्व - शाकोत्सव, महापूजा तथा शिक्षापत्री जयंती मनायी गई

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में धनुर्मास में प्रातः ५-४५ से ६-१५ तक महामंत्र धून तथा श्रृंगार आरती के बाद ७-३० तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत सार सिद्धि ग्रंथ की कथा पू. महंत स्वामी ज्ञान स्वामी के वक्तापद पर की गई। मकर संक्रांति के महापूजा का सुंदर आयोजन किया गया। महापूजा के बाद अखंड धून की पूर्णाहुति तथा हरिभक्तो द्वारा कीर्तन भक्ति की गयी। महंत स्वामीने उत्तरायण पर्व का माहात्म्य कहा।

ता. ४-२-१२ शनिवार को सभी हरिभक्तोने शाकोत्सव मनाया। महंत स्वामीने शब्जीयों का बघार किया। इस प्रसंग पर बहनोने रोटीयाँ बनाई। महंत स्वामीने शाकोत्सव कं महिमा बताई। महंत स्वामीने यजमान परिवार तथा स्वयं सेवको का सन्मान करके आशीर्वाद दिये।

वसंत पंचमी को ठाकुरजी समक्ष शिक्षापत्री ग्रंथ का पूजन-अर्चन आरती समूह में की गई। धून-किर्तन के बाद महंत स्वामीने वसंत पंचमी तथा शिक्षापत्री के निमित्त पर कथामृत पान करवाया। महंत स्वामी द्वारा यजमानो का तथा हरिभक्तों का सन्मान किया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रगति हो रही है। - प्रविण शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर, लेस्टर (आई.एस.एस.ओ.)

यु.के.

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर में वसंत पंचमी-शिक्षापत्री जयंती में ता. २६-१-१२ से ता. २८-१-१२ तक स.गु. शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी (मूली) ने शिक्षापत्री भाष्य की कथा की । प.भ. विष्णुभाई गांडाभाई पटेल (शिकागोवाले) परिवारने यजमान पद का लाभ लिया । शनिवार को आयोजित सभा में ''श्री सत्संग सरिता'' पुस्तिका अंग्रेजी-गुजराती भाष्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी (पूजारी) के मार्गदर्शन से तथा प.भ. तरुणभाई फरसुरामभाई त्रिवेदी के सौजन्य सेवा से प्रकाशित किया गया । शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा महेन्द्र भगत की प्रेरणा से ठाकुरजी को सुंदर वस्त्र से तथा आभूषण हरिभक्तो की तरफ से भेटं किया गया ।

ता. २८-१-१२ शनिवार को श्री शिक्षापत्री जयंती वसंत-पंचमी को मंदिर की सभा में शिक्षापत्री का पूजन,अर्चन, समूहआरती, वक्ताश्री का सन्मान श्री कानजीभाईने किया । महाप्रसाद श्री शांतिभाई पटेल की तरफ से किया गया ।

- किरणभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर, सीडनी (ओस्ट्रेलीया)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सुंदर सत्संग सभा हुई ।

ता. १५-१-१२ को मकर संक्रांति पर्व एक सुंदर पार्क में बनाया गया । इस प्रसंग पर ३०० हरिभक्त तथा भुज मंदिर के संत पधारकर कथावार्ता की । पतंगोत्सव जो गुजरात तथा भारत देश की संस्कृति की परंपरा है उसे धूमधाम से मनाया गया । इस उत्सव की यहाँ के न्युझ पेपरने प्रशंसा की । - तेजस पटेल

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर : स.गु. स्वामी परमेश्वरदासजी (रसिक स्वामी, कालुपुर मंदिर) गुरु स्वा. निरन्नमुक्तदासजी माघ शुक्ल-११ ता. ३-२-११ शुक्रवार को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद (मेडा स्वारवरीया) : प.भ. रतिभाई खीमजीभाई पटेल (स्कीम कमेटी के सदस्य) तथा प.भ. गोविन्दभाई खीमजीभाई पटेल की पूज्या माताजी शान्ताबहन खीमजीभाई पटेल ता. २५-२-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है ।

अहमदाबाद : (श्रीहरि के समकालीन श्री नथु भट्ट के पांचवी पीढी के) प.भ. सिद्धार्थ मणीलाल भट्ट (उ. ७६ वर्ष) ता. १-१-०२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

चराडवा (ता. हलवद) : प.भ. नरसीभाई अंबारामभाई चौहाण ता. १४-१-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अंबोड (आनंदपुरा) : प.भ. चावडा नवुबा हरिसिंहजी (उ. ८४ वर्ष) ता. २६-१-०२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

मेघाडीनगर : मंदिर के पुजारी श्री भगवानभाई पोपटभाई के सुपुत्र प.भ. जगदीशभाई भगवानभाई ता. २९-२-०२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

विजापुर : प.भ. विनुभाई मनसुख रामभाई मोदी माघ वद-१ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

नरोडा (कुहा) : श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के निष्ठावान प.भ. रमणभाई मणीभाई पटेल (लकड़ीवाला) माघ शुक्ल-३ ता. २६-२-०२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

ईश्वरपुरा (बदपुरा) : श्री नरनारायणदेव के सक्रिय कार्यकर्ता नवयुवान प.भ. अरविंदभाई गांडाभाई चौधरी (उम्र २३ वर्ष) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं । श्रीहरि उनके परिवार को शक्ति प्रदान करें ऐसी प्रार्थना ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।